वर्ष तक ...

1.6. नवपाषाण-युग *(The Neolithic Age : New Stone Age)*

प्रागैतिहासिक काल में मानव विकास की सबसे प्रमुख सीढ़ी नवपाषाणकालीन संस्कृति थी। यद्यपि कालक्रम के हिसाब से यह युग काफी छोटा है, तथापि सारे क्रांतिकारी परिवर्तन इसी युग में हुए। यह निश्चित करना अत्यंत ही कठिन है कि मध्यपाषाण-युग का अंत और नवपाषाण-युग का उदय कब हुआ (विश्वस्तर पर नवपाषाणयुगीन संस्कृतियों का आरंभ 7000 वर्ष पूर्व से माना जाता है, यद्यपि भारत में इस संस्कृति की ज्ञात तिथियाँ उतनी पुरानी नहीं हैं)। वस्तुतः, मनुष्य ने जिस समय से सुचारु रूप से कृषि-कर्म आरंभ कर दिया, अर्थात् **भोजन-संग्राहक** से वह **भोजन-उत्पादक** बन गया, उसी समय से नवपाषाण-युग का आरंभ मानना चाहिए। गोर्डन चाइल्ड का विचार था कि नवपाषाणयुगीन संस्कृति का उद्भव पश्चिमी एशिया के धन्वाकर क्षेत्र (fertile crescent) में हुआ और वहीं से यह संस्कृति विश्व के अन्य

Scanned with CamScanner

भागों में फैली; परंतु आधुनिक अन्वेषणों से अब यह प्रमाणित हो गयाहै कि "विश्व के विभिन्न हिस्सों में अनेक इलाके सर्वथा स्वतंत्र-रूप से अपने-अपने यहाँ की प्रमुख फसलों के सहारे खाद्य-उत्पादन की अवस्था में पहुँच गए थे।"

भारत में अनेक नवपाषाणिक बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। सबसे पहला और स्पष्ट प्रमाण मेहरगढ़ (सिंध और बलूचिस्तान-पाकिस्तान) से मिलता है। संभवतः, इस जगह 7000 वर्ष ई० पू० में ही कृषि-उत्पादन आरंभ हो चुका था। यहाँ से 5000 वर्ष ई० पू० में ही गेहूँ और जौ की विभिन्न प्रजातियों के उगाए जाने का प्रमाण मिलता है। इसी प्रकार बुर्जहोम (कश्मीर), किली गुल मोहम्मद (क्वेटा घाटी, पाकिस्तान), राना घुंडई (बलूचिस्तान-पाकिस्तान), सराय खोला (रावलपिंडी, पाकिस्तान), चिराँद (बिहार), मास्की, ब्रह्मगिरि, हलुर, कोडिकल, संगनकल्लू (कर्नाटक), पिकलीहल, उटनूर (आंध्रप्रदेश), पैयामपल्ली (तमिलनाडु) से नवपाषाणिक बस्तियों के अवशेष मिले हैं। कालीबंगा (राजस्थान), कोलडीहवा (उत्तरप्रदेश) से कृषि के प्रमाण एवं असम और मेघालय से नवपाषाणिक उपकरण मिले हैं। इन सभी स्थलों में विकसित बलूचिस्तान और सिंध की नवपाषाणिक संस्कृतियाँ थीं, जिन्होंने ग्रामीण सभ्यता की स्थापना की तथा आगे चलकर हड़प्पा-संस्कृति के शहरी स्वरूप को प्रभावित किया। दक्षिण भारत की नवपाषाणिक बस्तियाँ 2500 ई० पू० से अधिक पुरानी नहीं मानी जाती है।

नवपाषाण-युग में महत्त्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन हुए, जिन्होंने सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया। इस युग की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी मानव का भोजन-उत्पादक के रूप में परिवर्तन। अब स्थायी बस्तियों की स्थापना होने लगी। इसके कारण कृषि एवं पशुपालन का विकास हुआ। मिट्टी के बरतन और अन्य उपयोगी सामान तैयार किए गए। फलतः, शिल्प एवं व्यवसाय की प्रगति हुई। नए-नए व्यवसायों एवं शिल्पों के उदय ने मानव को अपने उपकरणों को और अधिक परिष्कृत करने पर बाध्य कर दिया। यद्यपि इस समय तक धातु के हथियार नहीं बनते थे, तथापि पत्थर के ही हथियार पहले की अपेक्षा अधिक उपयोगी और सुडौल बनाए गए। ये ज्यादा पैने थे। इनपर पॉलिश कर इन्हें चमकदार बनाया गया। इनमें हत्था (handle) लगाने की भी व्यवस्था थी। इस समय के पत्थर के हथियारों में सबसे महत्त्वपूर्ण हत्थेदार कुल्हाड़ी (celt) है, जिसका प्रयोग कृषि एवं बढ़ईगिरी दोनों में किया जाता था। पत्थर के ही हँसियानुमा औजार फसल काटने के लिए, तथा अनाज पीसने एवं कूटने के लिए ओखली एवं मूसल बनाए गए। हड्डी एवं सींग से छेनी, छुरी, रुखानी, बरमा, सूई, दाँतोंवाले कंघे, मछली का जाल बुनने का सूआ, काँटेदार बर्छी इत्यादि बनाए गए। इन उपकरणों को देखने से ही अंदाज लग जाता है कि नवपाषाणिक संस्कृति में अनेक शिल्पों का उदय हो रहा था। मिट्टी के बरतन बनाने, उसे पकाने, रँगने, मिट्टी की मूर्तियाँ, खिलौने एवं आभूषण बनाने का भी ज्ञान लोगों ने प्राप्त किया। हड्डी और पत्थर से भी आभूषण बनाए गए।

Scanned with CamScanner

नवपाषाण-युग में हुए आर्थिक परिवर्तनों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया। जनसंख्या में वृद्धि हुई और बड़ी संख्या में बस्तियाँ बसाई गईं। श्रम-विभाजन, पुरुष-स्त्री में विभेद इसी समय से प्रकट होते हैं। विभिन्न व्यवसायों में दक्षता प्राप्त किए हुए व्यवसायियों का अलग वर्ग तैयार होने लगा; जैसे—कुम्हार, बढ़ई, कृषक इत्यादि। व्यक्तिगत संपत्ति की भावना का विकास हुआ, जिसने सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को जन्म दिया। उत्पादन के कार्यों में पुरुष-वर्ग ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा, फलतः धीरे-धीरे मातृसत्तात्मक समाज का स्वरूप पितृसत्तात्मक बनने लगा। पुरातात्त्विक प्रमाणों से तो इस समय के सामाजिक या राजनीतिक जीवन के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती है; परंतु समाजशास्त्रियों ने प्राचीन एवं आधुनिक जनजातियों के विषय में जो अन्वेषण किए हैं उनसे पता लगता है कि नवपाषाणिक जातियाँ कुलचिह्नों (totems) के आधार पर कबीलों में संगठित थीं। कबीला का मुखिया राजा के समान ही कार्य करता था, यद्यपि उसका पद मनोनीत या निर्वाचित होता था। नवपाषाणिक मानव प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करता था। मातृदेवी की पूजा भी होती थी। मंदिरों एवं पुरोहितों का अभ्युदय नहीं हुआ था, किंतु जादूगरों का समाज एवं धर्म पर पूरा प्रभाव था। पुनर्जन्म में लोगों का विश्वास बढ़ता जा रहा था। मृतकों को कब्रों में दफनाकर उनके साथ उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ रख दी जाती थीं। ऐसा दो कारणों से किया जाता था।

Scanned with CamScanner

ऐसी धारणा थी कि मृतक फसलों के विकास में सहायक थे, अतः उन्हें प्रसन्न रखना आवश्यक था। दूसरी बात यह थी कि मृत्यु के बाद के जीवन में भी उन्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ सकती थी। यूरोप और दक्षिण भारत के कुछ कब्रगाहों में मृतकों के प्रति सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से बड़े-बड़े पत्थर लगा दिए जाते थे, जो **महापाषाण** (Megaliths) के नाम से जाने जाते हैं।

इस तरह नवपाषाण-युग में ही सभ्यता के मूल तत्त्व प्राप्त होते हैं, जिनका विकास धातुयुग में हुआ। कृषि, पशुपालन, शिल्प-व्यवसाय इसी काल में विकसित हुए। आर्थिक परिवर्तनों ने सामाजिक परिवर्तन भी ला दिए। कबीले, समाज, परिवार, पितृसत्तात्मक तत्त्व, व्यक्तिगत संपत्ति की भावना का उदय, शासन का प्रारंभिक स्वरूप, धर्म के प्रति लोगों की बढ़ती आस्था, जादू-टोने इत्यादि का प्रभाव इसी युग में आरंभ होते हैं। इन परिवर्तनों का मानव-सभ्यता के विकास में बहुत बड़ा योगदान था। आगे चलकर धातुयुग में इनकी और अधिक प्रगति हुई तथा मानव 'बर्बर' से 'सभ्य' बन सका। वस्तुतः, नवपाषाणिक ग्राम्य संस्कृतियों ने ही **कांस्ययुगीन** (Bronze Age) शहरी सभ्यताओं के उदय का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

नवपाषाणिक संस्कृति के उपर्युक्त तत्त्वों में अनेक भारत में भी पाए गए हैं। भारत के भिन्न-भिन्न भागों में नवपाषाणिक संस्कृतियों के विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं। इस संदर्भ में उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत (सिंध-बलूचिस्तान), उत्तरी भारत (कश्मीर), दक्षिण भारत (संगनकल्लू, पिकलीहल) और पूर्वी भारत (उड़ीसा, बिहार, असम और मेघालय) का उल्लेख किया जा सकता है। उत्तर-पश्चिम में मेहरगढ़, किलीगुल मुहम्मद, दंब सादात, राना घुंडई, कोट दीजी, अमरी इत्यादि प्रमुख स्थल हैं। मेहरगढ़ से कृषि एवं पशुपालन के प्रमाण मिलते हैं। किलीगुल मुहम्मद और अन्य स्थलों से भी कृषि और पशुपालन के प्रमाण मिलते हैं। इसके साथ ही कच्चे घर, अस्थि, प्रस्तर उपकरण एवं मिट्टी के बरतन मिले हैं। इन जगहों पर 4000 ई० पू० से आगे विकासशील ग्राम्य अर्थव्यवस्था का विस्तार देखने को मिलता है।

Scanned with CamScanner

मिलता है।

कश्मीर (बुर्जहोम) की नवपाषाणिक संस्कृति उत्तर-पश्चिम जितनी विकसित नहीं थी। यहाँ के निवासी गर्तगृहों (pits) में रहते थे, जिनमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। दीवारों में आले बने हुए थे। प्रवेशद्वार के पास चूल्हे थे। स्तंभ-गर्तों (post-holes) को देखने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि गर्तगृहों के ऊपर से छाजनी की जाती थी। यहाँ से हस्तनिर्मित मिट्टी के बरतन तथा हड्डी के उपकरण (काँटा, आरी, बर्छी, सूआ इत्यादि) मिले हैं। पहले चरण में यहाँ की अर्थव्यवस्था आखेट और मछली के शिकार पर आश्रित थी, परंतु नवपाषाण-युग के दूसरे चरण से कृषि एवं पशुपालन के भी प्रमाण मिलते हैं। दक्षिण में संगनकल्लू और पिकलीहल से पॉलिश किए गए प्रस्तर-उपकरण और मिट्टी के हस्तनिर्मित बरतन मिले हैं। यहाँ से कृषि और पशुपालन के प्रमाण भी उपलब्ध हुए हैं। इसी प्रकार कोलडीहवा (उत्तरप्रदेश) से चावल की खेती के साक्ष्य मिले हैं। कुछ विद्वानों की धारणा है कि दक्षिण भारत के नवपाषाणिक स्थल ईरानियों द्वारा स्थापित किए गए थे, परंतु पुरातात्त्विक प्रमाण स्पष्ट इंगित करते हैं कि इनका विकास स्थानीय तत्त्वों के सहयोग से हुआ था। पूर्वी भारत में सबसे महत्त्वपूर्ण नवपाषाणिक स्थल चिराँद (छपरा के निकट, बिहार में) है। यहाँ से चावल, गेहूँ, जौ, मूँग, मसूर इत्यादि की खेती के प्रमाण मिलते हैं। पशुपालन (भैंस, भेंड़, सूअर, कुत्ता) भी होता था। अनेक व्यक्ति आखेट एवं मछली पकड़ने का व्यवसाय करते थे। वस्त्र बुनने, अर्द्ध-बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण तैयार करने, मिट्टी के बरतन, खिलौने एवं मूर्तियाँ बनाने के भी प्रमाण मिलते हैं। चिराँद से पत्थर के अतिरिक्त बड़ी संख्या में हड्डी के औजार भी मिले हैं। बुर्जहोम के अतिरिक्त चिराँद ही ऐसा नवपाषाणिक स्थल है, जहाँ से बड़ी संख्या में अस्थि-उपकरण मिले हैं। यहाँ के निवासी सरकंडों और मिट्टी से बने घरों में रहते थे। चिराँद की नवपाषाणिक संस्कृति का विकास स्थानीय तत्त्वों द्वारा हुआ था, बाहरी प्रभाव से नहीं; परंतु असम और मेघालय की नव-पाषाणिक संस्कृतियाँ संभवतः दक्षिण-पूर्व एशियाई तत्त्वों से प्रभावित थीं।

Scanned with CamScanner